	CURRENT GLOBAL REVIEWER International Multidisciplinary Research Journal		ISSN- 2319-8648
	Impact Factor - (SJIF) -7. 139	Special Issue -28 , Vol. 7	March 2020 Peer Reviewerd



CURRENT GLOBAL REVIEWER

Impact Factor – 7.139 ISSN – 2319-86948
 Multidisciplinary International Research Journal
 PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

Relevance of Mahatma Gandhi in Today’s World

March 2020 Special Issue – 28, Vol. 7

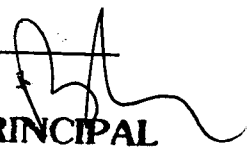
Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

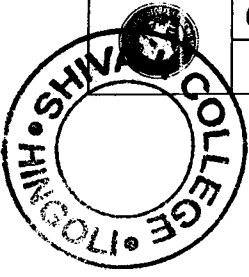
Guest Editors
Guide
Dr. B. G. Gaikwad
 Principal
 Shivaji College, Hingoli (MS)

Editor
Dr. Balasaheb S. Kshirsagar
 Director, Gandhi Study Center
 Shivaji College, Hingoli (MS)

Co-Editor
Dr. Wagh S.G.
 Dept. of Hindi
 Shivaji College, Hingoli (MS)

Shaurya Publication, Latur

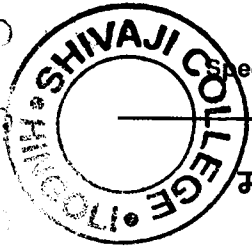

PRINCIPAL
 SHIVAJI COLLEGE
 Hingoli Dist. Hingoli



Index

1. 21 वी सदी में गांधी विचारधारा की प्रासंगिकता 1
डॉ. मुकेश वसावा
2. गाँधीजी के सामाजिक न्याय की परिकल्पना 4
प्रा.डॉ.संजय गणपती भालेराव
3. म.गांधीजी के सत्य और अहिंसा संबंधी विचार 7
प्रा.डॉ.रमेश वि.मोरे
4. हिंदी साहित्य और गाँधीवाद 9
डॉ.पंडित बन्ने
5. महात्मा गांधीजी के आर्थिक एवं विभिन्न विचारोंके दर्शन 12
श्रीमती प्रा. डॉ. जाधव मिनाश्री भास्कर
6. [REDACTED] 15
7. महात्मा गांधी की सहिष्णुता 17
डॉ. शंकर रामभाऊ पजई
8. महात्मा गांधीजी के आर्थिक और सामाजिक विचार 19
वाळवंटे राजकुमार अर्जुन
9. युग पुरुष महात्मा गांधी और स्वतंत्रता आंदोलन 22
(बापू एकांकी के विशेष संदर्भ में)
डॉ. व्हत्ते धीरज जनार्दन
10. गांधीवाद के राजनीतिक आयाम 24
प्रा. अतुल नारायण खोटे
11. महात्मा गांधीजी की ग्राम स्वराज्य की अवधारणा कि ग्रामिण विकास में भूमिका 27
विकास वसराव आडे , तुकाराम व्ही. आडे
12. गांधीवाद एक चर्चा 31
डॉ.मा.ना.गायकवाड

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli



महात्मा गांधी की आत्मकथा "सत्य के प्रयोग" में विद्यार्थी जीवन

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, शिवाजी महाविद्यालय, हिंगोली. जि. हिंगोली. 431513

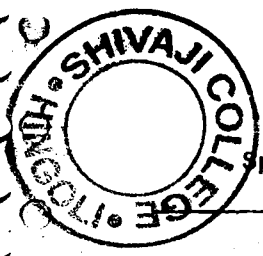
शोध सार-

आत्मकथा से सिधा अर्थ स्वयं की कथा कहने या लिखने से है। आत्मकथा एक व्यक्ति के समस्त जीवन का इतिहास ही नहीं बल्कि उसमें वर्णित घटनाओं की, क्रिया एवं प्रक्रियाओं का भी अंकन है। आत्मकथा में लेखक समाज का प्रतिष्ठित प्राणी होता है। प्रतिष्ठित व्यक्ति की कुछ विशेष विशेषताएं होती हैं जिसे भावी समाज जानने हेतु आतुर हो जाता है। यही कारण है कि वह प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्ति अपने समर्थकों के अनुरोध से प्रेरणा प्राप्त कर उनकी आतुरता को शांत करने के लिए आत्मकथा लेखन आरम्भ करता है।

मुख्य शब्द- आचरण की शुद्धता, अक्षरों की सुंदरता, अनुशासन,

आधुनिक युग में साहित्य की विधाओं में अनेक परिवर्तन हुए हैं। आज गद्य का जो विविधोन्मुखी विकास दिखाई देता है, यह आधुनिक युग का ही देन है। युरोपीय सभ्यता का वहन करने वाली अंग्रेजी भाषा के अध्ययन एवं अध्यापन के परिणाम स्वरूप साहित्यिक जगत में नूतन प्रवृत्तियों का समावेश हुआ और अनेक नवीन विधाएं भी प्रकाश में आईं या इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि साहित्य में जैसे-जैसे यथार्थता का समावेश होता जात है, वैसे ही वैसे उसकी गद्यात्मक विधाओं की समृद्धि होती जाती है। यही कारण है कि आधुनिक युग में आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रा-वृत्तांत, डायरी, पत्राचार तथा इण्टरव्यू आदि नवीन विधाओं का अनवरत परिष्कार हो रहा है। इन सम्पूर्ण विधाओं में आत्मकथात्मक साहित्य सर्वात्मक कलापूर्ण एवं मानवीय विधा है, जिसने अपनी विशिष्टताओं के कारण अपना पृथक अस्तित्व स्थापित कर लिया है। आत्मकथा हिन्दी साहित्य की नवविकसित विधा के रूप में प्रतिष्ठित है। जिसका शाब्दिक अर्थ है- 'अपनी कथा' अर्थात् इसमें लेखक स्वयं के बीते हुए जीवन की कहानी का विवेचन यथार्थता के साथ करता है। आत्मकथा से सिधा अर्थ स्वयं की कथा कहने या लिखने से है।¹ प्रस्तुत शोध पत्र में मनुष्य के जीवन में शिक्षा का महत्व असाधारण है साथ ही सामाजिक जीवन में शुद्ध आचरण अत्यंत महत्व का है। गांधीजी के विद्यार्थी जीवन को समझना प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में संशोधन की समीक्षात्मक तथा विश्लेषणात्मक पध्दति को अपनाया गया है।

आत्मकथा एक व्यक्ति के समस्त जीवन का इतिहास ही नहीं बल्कि उसमें वर्णित घटनाओं की, क्रिया एवं प्रक्रियाओं का भी अंकन है। आत्मकथा में लेखक समाज का प्रतिष्ठित प्राणी होता है। प्रतिष्ठित व्यक्ति की कुछ विशेष विशेषताएं होती हैं जिसे भावी समाज जानने हेतु आतुर हो जाता है। यही कारण है कि वह प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्ति अपने समर्थकों के अनुरोध से प्रेरणा प्राप्त कर उनकी आतुरता को शांत करने के लिए आत्मकथा लेखन आरम्भ करता है। मोहनदास करमचंद गांधी ने कहा था - मेरा जीवन ही मेरा सन्देश है।² महात्मा गांधीजी ने अपने "सत्य के प्रयोग" के अंतर्गत अपने विद्यार्थी जीवन के अनेक पहलुओं पर प्रकाश डाला हुआ है। जिसके माध्यम से आज के विद्यार्थियों को एक महत्वपूर्ण संदेश दिया जा सकता है। किसी व्यक्ति विशेष का जीवन-दर्शन सारे विश्व के लिए अनुकरणीय इसलिए होता है कि वह अपने जीवन का बलिदान सिर्फ अपने आदर्श के लिए नहीं, बल्कि सारे विश्व के लिए करता है। महात्मा गांधी एक ऐसे ही महामानव थे। महात्म गांधीजी ने स्वयं काहा है कि "आत्मकथा लिखने का मेरा कोई आशय नहीं था। मुझे तो आत्मकथा के बहाने सत्य के जो अनेक प्रयोग मैंने किये हैं उसकी कथा लिखनी है। उसमें मेरा जीवन ओत प्रोत होने के कारण कथा एक जीवन वृत्तांत जैसी बन जायेगी।"³ उनकी आत्मकथा, सत्य के प्रयोग के कुछ अंश को ही मेरा विद्यार्थी-काल में प्रस्तुत किया है। अपने विद्यार्थी जीवन के एक पहलुओं पर उन्होंने प्रकाश डाला है, साथ ही साथ शिक्षा संबंधी अपने भौतिक विचारों को भी प्रस्तुत किया है। सत्य के प्रति आस्था होने के कारण उनके विद्यार्थी जीवन में कई ऐसे प्रसंग आए जिनमें मुलतः उनकी गलती न रहते हुए भी उन्होंने उसे स्वीकार किया। इसका जिक्र उन्होंने स्पष्टता के साथ किया है। अपने विद्यार्थी जीवन में वे नहीं माने किंतु शिक्षकों का प्रेम-संपादन वे हमेशा करते रहे। 4 और 10 रुपए की मासिक छात्रवृत्तियाँ भी उन्होंने प्राप्त किंतु उसमें उनकी योग्यता की अपेक्षा भाग्यने ने ज्यादा मदत की इसे वे स्वीकार करते हैं।



अपने विद्यार्थी- जीवन में उन्होंने आचरण की शुद्धता पर (सदाचार की वृत्ति) विशेष बल दिया है। इसलिए माता-पिता के पास उनका पढ़ाई या चाल-चलन को लेकर कभी कोई शिकायत नहीं की गई। सदाचार में चूक होने पर शिक्षकों का उलाहना देना या देने की भावना भी उत्पन्न होना, दंड मात्र भी समझा जाना- यह स्थिति उनके लिए असहनीय थी।

उस समय थेरावजी एथलजी गोमी हेडमास्टर थे। एक ओर वे विद्यार्थी-प्रिय तो दूसरी ओर-कठोर अनुशासन प्रिय एवं नियम-पालन के प्रति कटिबद्ध उन्होंने ने ऊँचे दर्जे के विद्यार्थियों के लिए कसरत एवं क्रिकेट अनिवार्य कर दी। ऐसे समय महात्मा गांधी के लिए भी जाना अनिवार्य हो गया। किंतु व्यायाम के प्रति रुची और कसरत का शिक्षा के साथ कोई संबंध नहीं इस प्रकार की गलत विचारधारा उस समय उनमें व्याप्त थी। व्यायाम के प्रति अरुची का एक कारण उनका झंपूपन, तो दूसरा पिताजी की सेवा- सुश्रुषा करने की तीव्र इच्छा। परिणामस्वरूप यथा समय न पहुंच पाने पर दोषी मानकर उन्हें देर से आना का जुर्माना हो गया। अनुपस्थिति का सही कारण कहलाने पर भी उन्हें झूठा कहा गया-इस बात से उन्हें अत्यंत दुःख पहुँचा। अपनी पढ़ाई के दिनों में उनकी यह पहली और आखरी भूल थी बाद में शिक्षा संबंधी अपने विचारों को अभिव्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि शारीरिक शिक्षा के लिए भी विद्या अध्ययन में उतना ही स्थान दिया जाना चाहिए जितना मानसिक शिक्षा को दिया जाता है।

शिक्षा में अक्षरों की सुंदरता अनिवार्य है। उनका कहना था कि अच्छा अक्षर लिखना विद्या का आवश्यक अंग है। खत सुधारने के लिए लेखन-कला आवश्यक है। अपनी इस कमतरता आवश्यक अंग है। अपनी इस कमतरता का अहसास उन्हें तब हुआ, जब दक्षिण अफ्रिका में जन्में और-पढ़े युवकों के मोती के तरह अक्षर को उन्होंने देखा। उस समय उन्हें यह महसूस हुआ कि खत लेखन का खराब होना यह अधूरी शिक्षा की निशानी है। इसलिए छोटी उम्र में ही बच्चों को सुन्दर लिखावट की शिक्षा दी जानी चाहिए यह विचार प्रस्तुत किया।

शिक्षा संबंधी अपने विचारों को अभिव्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही होना चाहिए, फिर भी शिक्षा में मातृभाषा के साथ ही साथ राष्ट्रभाषा, संस्कृत, हिन्दी, और अन्य भारतीय भाषा के लिए स्थान दिया जाना चाहिए। संस्कृत उन्हें उस समय कठिन आवश्यक लगती थी किंतु कृष्णशंकर मास्टर के सह मार्गदर्शन के कारण ही वे संस्कृत शास्त्रों का आनंद ग्रहण कर पाए। उनका दृष्टिकोण यह रहा कि हिन्दी, गुजराती संस्कृत वास्तव में एक ही भाषा है और उसी प्रकार फारसी और अरबी भी।

उनका कहना था कि हमारा शिक्षा व्यवस्था में धार्मिक शिक्षा को भी कहीं न कहीं स्थान दिया जाना चाहिए। धर्म से उनका अभिप्राय-आत्मसाक्षात्कार से, आत्म-ज्ञान से है जो उन्हें पाठशाला में शिक्षकों के माध्यम से सहज रूप में मिलनी चाहिए थी किंतु वह नहीं मिल पाती। किंतु वहीं शिक्षा उन्हें अपनी पुरानी थई (रम्भा बाई) से मिली जिसके परिणाम स्वरूप रामनाम स्वरूप रामनाम की अमोघ शक्ति वे जीवन भर अनुभव कर सके।

उनका विचार था कि शुभ-अशुभ संस्कारों का गहरा प्रभाव व्यक्ति जीवन पर पड़ता है। संस्कारों के कारण ही जीवन को एक नई दिशा मिलती है इसलिए बचपन में ही बच्चों पर अच्छे संस्कार डाले जाने चाहिए। संस्कारों के निर्माण में अच्छे ग्रंथों को मनन-पठन का बहुत बड़ा योगदान होता है इसलिए महात्मा गांधी को इस बात का बहुत पश्चरताप रहा कि वे लडकपन में अच्छे श्रेष्ठ ग्रंथों का श्रवण-पठन नहीं कर पाए।

इस प्रकार महात्मा गांधीजी ने अपने जीवन के अनेक पहलुओं को बतलाते हुए अपने विद्यार्थी जीवन को प्रस्तुत किया है। जिसके माध्यम से आज का विद्यार्थी उनसे प्रेरणा लेकर अपने जीवन में एक आदर्श विचारों को लेकर चल सकता है।

सन्दर्भ सूची :-

- 1) व्यास ज्योति , आधुनिक हिन्दी साहित्य में आत्मकथा और संस्मरण विधा, अमन प्रकाशन कानपुर पृष्ठ - 15
- 2) माथुर संगीता, गांधी दर्शन उद्योग वाद एवं संस्कृति, न्युमन पब्लिकेशन, परभणी जुलाई 2014, पृष्ठ-07
- 3) मोहनदास करमचंद गांधी, संक्षेपाकार भारतकुमार कुमारअप्पा, गांधीजी की संक्षीप्त आत्मकथा, नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद-14 अगस्त - 2015, पृष्ठ- 05

T.C.
M. B. Sawani
Assistant Professor
Shivaji College, Hingoli.
Tq. & Dist. Hingoli. (MS.)